



আম্রপালী

...বৌশ্রী স্মরণে... অনন্য কাহিনী... অক্ষয় চন্দ্র...

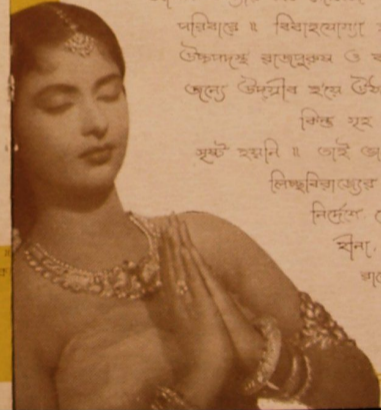


नालन्दा क्लिप्तम् नर
आम्रपाली
 छिन्ननाभु ७ परिष्कलना
 श्रीजगन्नाथ'द'
 ब्रह्मजना
 श्रीललिताकिशोर
 मन्गीत परिष्कलना
 अनिल वागुचि
 वृद्ध परिष्कलना
 मन्थाप्या विहारि (माध्याज)
 छिन्नमर्धन
 विद्यापति ह्याथ
 गन्धर्व (मन्थाप्या)
 सुगील मन्थक
 गन्धर्व (मन्गीजस)
 गुरुमन्थक ह्याथ
 दुर्गा मित्र
 मन्थाना
 उदीन मन्थ

क्लिप्त निर्दयना
 मन्थुन वास कोधुडी
 कर्ममिथ
 मन्थ ह्याथ
 गीतका
 गुरुमल (उड)
 पुलक वल्लभापाध्याय
 विनय मन्थक
 क्लिप्तना
 ऐलन माग्गुली
 मन्थ मन्गीत
 सुदुग्गी कोधुडी
 मन्थिल्य
 कविमन्थ मन्थक
 मन्थ क्लिप्त
 मन्थाना मन्थ
 मन्थ विन्याज
 एतलि
 वनलिपि
 पूर्णधु पत्नी

प्रथम विन्याज
 पूर्णधु उडोचर्य
 मन्थ मन्थापाध्याय
 परिष्कलना
 आम्र नाथ वागुच
 कर्ममिथ
 जयकुमार (वल्लभादे)
 मन्थिल्य
 गुरुमल (मन्थाना)
 मन्थाना मन्थक
 निवे सुदुग्गी मन्थादे
 आम्रवापय मन्थक
 डि वागुच मन्थक
 आलोक मन्थक
 मन्थाना मन्थक
 विमल मन्थक
 सुधी मन्थक
 मन्थाना मन्थक
 प्रथम परिष्कलना
 निष्कल पत्नी

मन्थिल्य
 परिष्कलना
 जगन्नाथ वल्लभापाध्याय
 मन्थाना मन्थक
 मन्थिल्य
 मन्थाना मन्थक
 मन्थिल्य
 मन्थाना मन्थक
 मन्थिल्य
 मन्थाना मन्थक
 मन्थिल्य
 मन्थाना मन्थक
 मन्थिल्य
 मन्थाना मन्थक
 मन्थिल्य
 मन्थाना मन्थक



आम्रपाली

अनामान्ना ज्ञापयति आर अन्तर्यं अन्तमन्त्रम् ॥
 अद्भुतं अन्तरमन्त्रं अत्र एकैव आल म् ॥
 आपन कन्धार मठ लालिजा पाणिजे इत्येव एव ज्ञानेन एक मन्त्रकं
 परिभाषे ॥ विद्याशल्याया इत्येव मन्त्र मन्त्र अन्तक ज्ञाना, इत्येवमात्र,
 उक्तान्त्रं ज्ञानमन्त्रं ७ च इति विभिन्नेषु युक्ति लोके विवाह कर्तव्ये
 ज्ञाने अन्तरीय इत्येव उक्तं ॥
 किञ्च श्रुतं किञ्च श्रुतिं इत्येव ज्ञाने आम्रपाली
 श्रुते इत्येव ॥ अत्रै ज्ञानेन अद्भुतं इत्येव आर पञ्चममन्त्राणी
 लिखन्निजाज्ञेयं मन्त्राधिकं प्रथमं अन्तरीयं मन्त्राज
 निर्दयं लक्ष्मणं सर्वलक्ष्मणं सुन्दरी, मन्त्रगीते पुलना-
 र्थिना, मन्त्र-पितृ पाणिजेत्येव आम्रपाली लिखन्नि-
 ज्ञानेन ज्ञानेन ऐश्वर्यात् नगर-मन्त्राणी
 निष्कलितं शल्प ॥
 कलावती आम्रपाली आर



यौद्धेय श्रुत ७ श्रीगीर्वाण
 लाले आम्रपाली वन्दु
 प्रधानं पृथक्पृथक्
 अः ज्ञाना विनोद पाल ॥
 उक्तं
 -अः नलिनाक्षं मन्त्रं
 अः कालिदास नाम
 श्री लक्ष्मण उड
 श्री लक्ष्मण वलिमिश्र

लक्ष्मण उड मन्गीत ॥ मन्थाना मन्थक ॥ प्रथिमा वानाधि ॥ माधुवी मन्थक ॥ अत्रै एतानि एतानि मन्थक ॥
 इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव
 मन्थ क्लिप्त ॥ इत्येव इत्येव ॥ कर्ममिथ ॥ अनिल वागुच ॥ मन्थाना मन्थक ॥ मन्थिल्य ॥ मन्थाना मन्थक ॥
 मन्थाना मन्थक ॥ मन्थिल्य ॥ मन्थाना मन्थक ॥ मन्थिल्य ॥ मन्थाना मन्थक ॥ मन्थिल्य ॥ मन्थाना मन्थक ॥
 मन्थिल्य ॥ मन्थाना मन्थक ॥ मन्थिल्य ॥ मन्थाना मन्थक ॥ मन्थिल्य ॥ मन्थाना मन्थक ॥ मन्थिल्य ॥ मन्थाना मन्थक ॥

ପଞ୍ଚମ ଶର୍ବମୁଦ୍ରାର ବିନିମୟ ଏ କାହା ମଲାରଞ୍ଜନ କର
 ଥାଏ ॥ ଅଧିକାଂଶ ପୁରୁଷମାନେ ହୋତାହୁର ହେ
 ଛାଡ଼ି ପର୍ଯ୍ୟାପ୍ତପୁଷ୍ପକବକନାଡ଼ ଆମ୍ବପାଲିର ମାନସିଧି
 ଘାଡ଼ିର ଆମ୍ବପାଲି ॥ ଅଧିକାଂଶମାନେ ଆମ୍ବପାଲିର
 ଆଲୋଚନା ଥାଏ ବିରତ ନୟ ॥ ବିନିଧି ଉଦ୍ଧାର
 ଆଉ ଅଧିକାର କରୁ କରୁ ଅଧିକାର ହେଉ ଥାଏ
 ଆମ୍ବପାଲିକ ଛିନିତ ନିଧି ଏକ ବ୍ୟକ୍ତିର ଅଧିକାର
 ବିଚାରର ଫଳରେ ଉଦ୍ଧାର ହେଉ ଉଠିଲା ॥ କିନ୍ତୁ ପ୍ରକୃତି
 ପଦ୍ମ ଯେମନ ଭଲହାମିର ମଧ୍ୟ ଥାଏକେ ଅଧିକାର ମଧୁର
 କର୍ମମାନେ ଏ ଭଲକ ଦେଖ ନା, ତେଣୁନି ଆମ୍ବପାଲି
 ଗର୍ଭମାତାରଞ୍ଜନକାରିଣୀ ହେଉ, କାର୍ତ୍ତିକେ ମନ ଦିଲା ନା
 କିନ୍ତୁ ଦିଶି ପାରିଲା ନା ॥

କିନ୍ତୁ ଉପରୋକ୍ତ ଏକଦିନ ହେଉ ଏହା ॥
 ଶୋରଣେ ଆହୁତ ହେଉ ଏହା ଏ ଦେଖାକର ଥାଏ ॥ ଭର
 ଉଦ୍ଧାର ଆହୁତ ବ୍ୟକ୍ତିର ହୁଲେ ଆମ୍ବପାଲିର ମନ ॥ ଏହା
 ଭାବେ ଯେ ଏ ଉଦ୍ଧାର ପ୍ରକାଶ ହିଲା ଏକଦିନ ॥ ବିଷୟ ଏ



ଦଳ ମେଲି ଦେଲା ॥ ଆହୁତାନ କାହା ଭର ଅଧିକ ଆଜ୍ଞା ମାର୍ଥକଭୟ ଧନ୍ୟ
 ହେ ଘର ॥

ଅଧିକାଂଶ ଆମ୍ବପାଲିର ଉପାଦେଇ ଘଟେଇ ॥ ଏ
 ଆଜ୍ଞା ମହାଲର ଜନନୀ ॥ ପ୍ରତିଟି ହେଉକରି ଭର ଏକମାମ
 ମହାଲର କଲ୍ୟାଣ-ପ୍ରଚ୍ଛେଦେ ଉଦ୍ଧାରକୃତ ॥ କିନ୍ତୁ ପରିଷମ ଏ
 ପ୍ରତିକୃତ ॥ ଅର୍ଥ ଭର କାମନାର ପମରା ନିଧି ଏ ଅଧିକାଂଶ
 ପାଲେ ଦଳ ଆମ୍ବପାଲିର ଆହୁତ ଆମେ ଭରା ଘର କଲ୍ୟାଣ
 ଆମ୍ବପାଲିକ, ଘର ଏହି ମଲାରଞ୍ଜନକାରିଣୀକ, ଆଉ
 'କର୍ତ୍ତାମନ୍ତ୍ରାଣେ' ମିତ୍ରବନ ଯୋବନଚକଳ

କିନ୍ତୁ ଆମ୍ବପାଲିର ନୟନ ଆଜ୍ଞା ଭର କର୍ତ୍ତାମନ୍ତ୍ର ଲେଇ ॥
 ଆହୁତ ଭର ଅଧିକାଂଶ ମୂର୍ଖିତେ ମହାନ ହେଉଇ ମିତ୍ର ମାଧୁର୍ୟ ॥ ଏ ଆହୁତ
 କାମିତ କର୍ତ୍ତେ ମହାଲର କାହା ନିବଦନ କର : ନାଗରୀ ହେଉ ଆମି
 ମହାଲର ମା ॥ ଏ ନାଗରୀ ମା ହେଉଇ ଯୋଗ୍ୟ ଘର କହେ, ଏ ଆହୁତ
 ମା, ଭରପର ନାଗରୀ ॥

ଜନନୀ ଆମ୍ବପାଲିର ଏ ଆହୁତର ପ୍ରତିକ୍ରିୟା ହେଲା





କିନ୍ତୁ ଭିନ୍ନରୂପ ॥ କିନ୍ତୁ ହ'ଲ୍ସ ଓହ୍ଲେ ଏକ ସାର୍ଥକୀ ଶକ୍ତି ॥ ଆମ୍ଭପାଲିର
 ମହାନଙ୍କ ଓହ୍ଲେ-ମିହିର ପଥର ପ୍ରତିବନ୍ଧକ ରୁକାଡ଼େ ପଥର ଚକ୍ର କରଲେ
 ଗାଳି ହେବା କରବାର ॥ ନିଷ୍ଠା ରାଜ୍ୟ ସୁମତ୍ତ ମିଷ୍ଟକ ହେବା କରବାର ଉପକର
 ପ୍ରଚୟେ.....

ଦେବକାମ ଯେ ଦୁର୍ଭିକ୍ଷିକି ସାର୍ଥକ ହେଲା ନା ॥ କିନ୍ତୁ ଏକମାତ୍ର ମହାନର ଜୀବନ-
 ମହାତ୍ମ୍ୟ ଆର୍ତ୍ତକିଟ ହେଉ ଓହ୍ଲେ ଆମ୍ଭପାଲି ॥ ଉପକାମ ମହାନରହି ନିରାପଣର
 ଉନ୍ମେ ଆମ୍ଭପାଲି ଏକମାତ୍ର ମହାନର ମଞ୍ଜୁ ଚିରବିଷ୍ଣୁଙ୍କ ସିକାର କର ନିଲେ ॥
 ନିଃମତ୍ତ ନିଃମହାତ୍ମ୍ୟ ନିରବଲକ୍ଷ ଆମ୍ଭପାଲିର ଅନ୍ତର ବେଦନାୟ ଆର୍ତ୍ତନାୟ
 କର ଓହ୍ଲେ ॥

କିନ୍ତୁ ଗର୍ବମତାରଜନକାର୍ଯ୍ୟିଣୀ - ଜୀବନର ଅଧଃପତନ ଆର ମର୍ଦ୍ଦାହତ୍ୟାର
 ଆର୍ତ୍ତନାୟକେ କି ଶକ୍ଷ ପରିପାତି ବ'ଲେ ସିକାର କର ନିୟେଇଲେ ଆମ୍ଭପାଲି ?
 ଅଥବା ଶକ୍ତ ଆଲୋକରମିତେ ଅବଗାହନ କ'ର ଅଧଃପତିତ
 ଆମ୍ଭପାଲି କ୍ଷମାକ୍ଷରିତା ହେବା ଆନନ୍ଦିତା ଆମ୍ଭପାଲିତେ - କର କରୁଣା
 ଲାଓ କ'ର ଯେ ବିଷ୍ଣ-ବନ୍ଦିତ ହେଉ ଓହ୍ଲେ ଯେଉଁ ଆମ୍ଭପାଲି ରୂପେ ?
 ଭାବି ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହେଉନା ॥

ହାତ୍ୟ ଅନ୍ତର କୁହୁମ ବନ୍ଧନ
 ଦେଖିବି ମଞ୍ଜୁରୀ ନାହିଁ
 ନୟନ ଅଞ୍ଜଳି ମଧୁମ ଉଞ୍ଜଳି
 ମିଳନ-ସୂକ୍ଷ୍ମା ହାନ୍ତି ।
 ବୁକି ଯେ ମୁନଦର ଜୟହସ୍ତେ
 ଆମ୍ଭିତେ କିଂଚିତ୍ତ ବାଞ୍ଛିପଥ
 ଯେ କ୍ରମ କିର୍ତ୍ତନ କଳାପ ନର୍ତ୍ତନ
 ଓହ୍ଲେ ଅନ୍ତର ବାଞ୍ଛୁକ ॥
 କି ମଧୁ ହେଉଛି ଚପଳ ଉଞ୍ଜଳି
 ଚରଣ ମିଞ୍ଜିନୀ ବହେ ଓହ୍ଲେ
 ବିଲାମି ମଞ୍ଜିକା ଯାହୁନ କ୍ରମମିଥା
 ଅଧର କୁଞ୍ଜଳେ ଯେନ ଯାଉଛି ।
 ପୁଲକ ମିଞ୍ଜିତ ଯେହେ ଆପଣ
 ଆପଣ କମ୍ପିତ ଉଞ୍ଜଳେ
 ଉଞ୍ଜଳ ଚନ୍ଦ୍ରମେ ମାଳିକା ବନ୍ଧନ
 ତବେ ତନୁଲତା ସମ୍ପନ୍ନିତ ॥

ରଚନା ॥ ପୁଲକ ବନ୍ଧୁପାପାୟ
 ଯାହୁଛନ୍ତି ॥ ସକ୍ଷ୍ୟା ମୁଖ୍ୟାପାଧ୍ୟାୟ
 ପ୍ରତିମା ବନ୍ଧୁପାପାଧ୍ୟାୟ

ମଞ୍ଜୁ

ଯେବନ ଚକ୍ରମ ହେ ବରକାଳ
 ପ୍ରବନ୍ଧ ମିପାମିତ ଅଭିମତୀ ପାଦ
 ନୟନ ଉଞ୍ଜଳ
 ଭାମ କ୍ରମ ବହୁ
 ବହୁତ ମୋହନ ଦୃଷ୍ଟିତ ଅନ୍ଧାର ।
 ମଞ୍ଜୁତ ଛନ୍ଦ ଓହ୍ଲେ ବାମି
 ଯାପିବ ଆନନ୍ଦ ଅନ୍ତର ଯମି
 ମଞ୍ଜୁତେ ଲଞ୍ଜାୟ
 ବାମର ମଞ୍ଜୁତ
 ମଦନ ମହାତ୍ତେ ଯେଉଁ ଉଞ୍ଜଳ ॥

ରଚନା ॥ ଶ୍ୟାମଳ ଉଞ୍ଜଳ
 ଯାହୁଛନ୍ତି ॥ ସକ୍ଷ୍ୟା ମୁଖ୍ୟାପାଧ୍ୟାୟ

ବହୁକର୍ମ ମୁଖ୍ୟିତ ଗଗନ
 କର ବର ଧାମା ବହୁ ମଘଳ
 ଯେହେ ନିର୍କର କରୁଛି
 ଧରଣୀର ହେଉ ଆଜି ଉଞ୍ଜଳ
 ବର୍ଷର ଅନୁବାଣ
 ପଲ୍ଲବ ଫୁଲ ଜାଣ
 କହୁଛୁ ମୁଞ୍ଜୁତ ଗଗନ ।

ଧୂଳି ମଧୁର ମୁଞ୍ଜୁତ ଶାନ୍ତିତେ
 ଦାଓ ଓବ କ୍ରମ-ସୁଧା ଶାନ୍ତିତେ
 ମିଳନ ମାଳୁଥାନି ଗାନ୍ଧିୟା
 ଦୁଃଖନାୟ ବରି ମୁଖେ ମାଡିୟା
 ଯେବନ ଯେହେତ ମଞ୍ଜୁତ ଯେହେତ
 ଏହି ନିମି ଯାକ ଯେମ ଯେମ ॥

ରଚନା ॥ ବିନୟ ହୃଦୟ ନୃମଞ୍ଜୁତ
 ଯାହୁଛନ୍ତି ॥ ସକ୍ଷ୍ୟା ମୁଖ୍ୟାପାଧ୍ୟାୟ



ନାଲକା ଶିଳ୍ପମ - ଏହି ବିଷୟ ବିଷୟ
 ପ୍ରୟୋଜନୀ
 ଅଲିଲିତାକିଶୋର
 କାର୍ଯ୍ୟ
 ଆମୋକ ଉଞ୍ଜ
 ପଢ଼ିଛନ୍ତି
 ଅଗ୍ରବାସକର

परियोगाय साधुनाम्
 विनाशाय च दुष्कृतम् ॥
 धर्मसंस्थापनार्थाय
 जम्ह्वामि यूगं यूगं ॥



अमीम कुमार ॥
 मविज छाटोर्जि ॥
 छवि विश्वाय ॥ ॥
 पाहङ्गी मानुष्य ॥
 जहर गान्धुली ॥
 जहर राय ॥ ॥
 नीजिग मुथार्जि ॥
 एषोड एमन ॥ ॥
 ॥ आडनीत ॥

प्रत्येसिड एकेरप्रतिज्जरस-एर
 मप्रदक् नित्दन्

नादर निमाह